

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

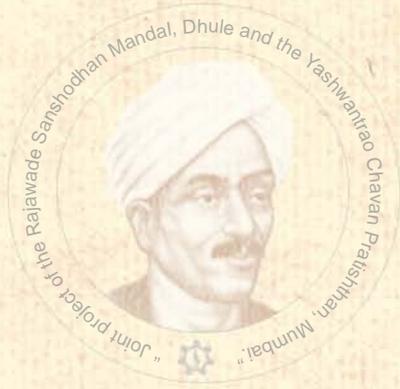
ग्रंथ क्रमांक ७३४ वे २०२ (४५८)

ग्रंथ नाम ज्ञानेश्वरी सधुनिकृत

विषय म० वेदांत

ज्ञानेश्वरी - अधुनांकृत

प्रारंभ
नेवाण



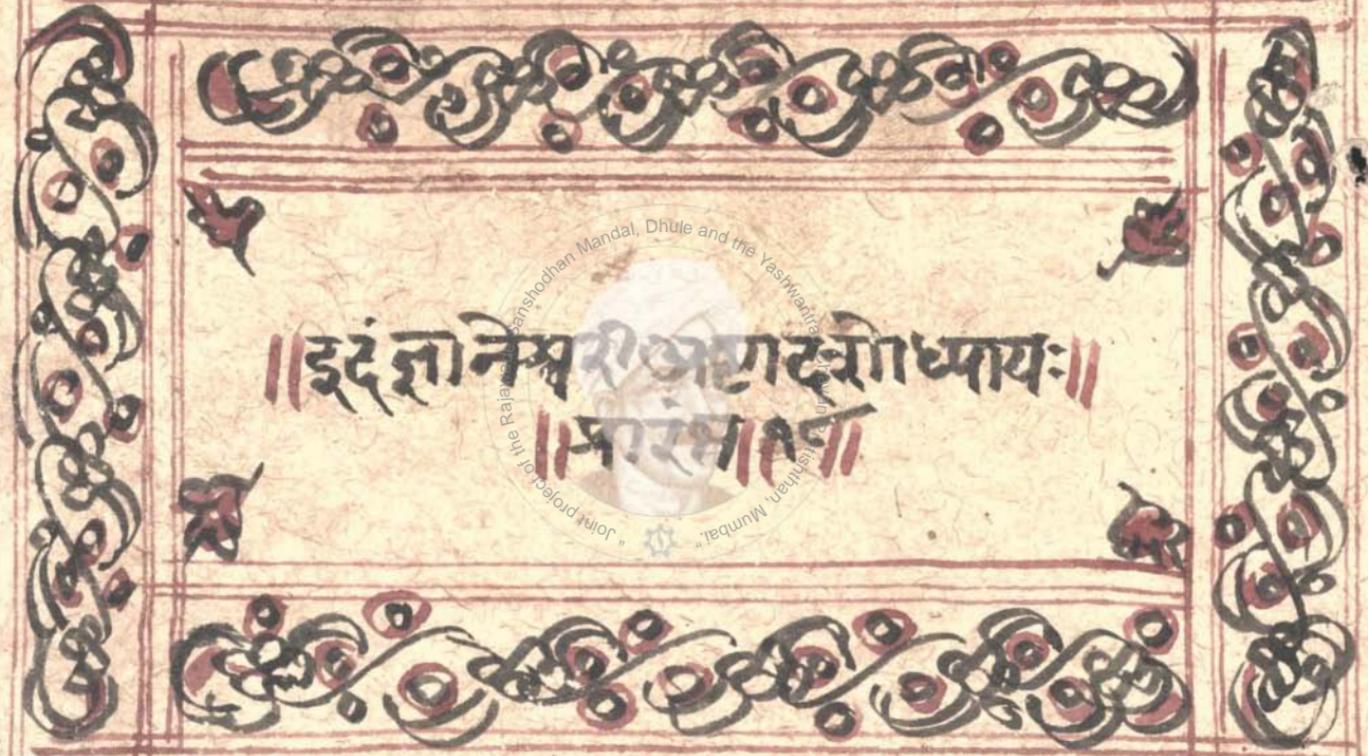
(1)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ इदं ज्ञानेश्वरी अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ प्रारंभात् ॥

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."



श्री.

११

(2)

श्री गणेशाय नमः ॥ जय जय देव निर्मल ॥ निज जना
 अरि क्लमंगल ॥ जन्म जरा जलद जाल ॥ प्रसंजन ॥ ज
 य जय देव प्रबल ॥ विदलिता मंगल कुल ॥ निगमागम
 दृम फल ॥ फल प्रद ॥ २ ॥ जय जय देव सर्वल ॥ विगत विष
 यक सल ॥ कलित काव कौतुहल ॥ कला तित ॥ ३ ॥ जय ज
 य देव निश्चल ॥ क्वचित्त पान तुंदि ॥ जगदुन्मील ना
 विरल ॥ केलि प्रिय ॥ ४ ॥ जय जय देव निष्कल ॥ स्फुरद
 मंदानंद बहुल ॥ नित्य निरस्ता रिक्ल मल ॥ मूल मुत ॥ ५ ॥
 जय जय देव स्वप्रभ ॥ जगदंबुदग मनिम ॥ भुव नोद्रवा
 रंभस्तम ॥ भव ध्वंस ॥ ६ ॥ जय जय देवै कुरूप ॥ अति कृत

राम
॥ ११ ॥

(2A)

कंदर्पसर्पद्वयं भक्तभावभुवन्दीप्य ॥ तापापह ॥ ११ ॥ जयज
यदेव अद्वितीय ॥ परिणतोपरमेव प्रिय ॥ निजजयजीत
भजनीय ॥ मायागम्यु ॥ १२ ॥ जयजयदेवश्रीगुरो ॥ अकल्प
नाप्यकल्पतरो ॥ स्वसविदमबीजप्रहरो ॥ हरावनि ॥ १३ ॥
हेंकदएक्येसैसै ॥ नानापरिभाषावसे ॥ स्तोत्रकुरुंतुज
दोषे ॥ निर्विशेषा ॥ १४ ॥ जिह्वविशेषाणि विशोषिजे ॥ ते
दृश्य नरुपतुसै ॥ हेजगामोह्रणो निल्लाजे ॥ वा
नगाइदि ॥ १५ ॥ परिमयो देवासागर ॥ हातवं वितयाडग
स ॥ जवं नदेखेसुधाकरु ॥ उदयाआलो ॥ १६ ॥ सोमव्रंतुनि
जनिर्हरि ॥ चंद्रा अर्घ्यादीकनकरि ॥ तेतोविअवधारि ॥

(3)

ता ॥

करबीकीजि ॥ १ ॥ निरौंकेसेंबसंतसंगे ॥ अवचितयाश
 दुत्ती ॥ आंगे ॥ फुडतीतयाहिजोगे ॥ धररौंनदे ॥ ५ ॥ पद्रि
 णीरबीकीररा ॥ लाहेसगलाजेकोरा ॥ कांजेकेसिंवत
 लेलवरा ॥ आंगभुले ॥ धतेसातुतेमीजेयस्मरे ॥ तेय
 मीपरागमीविसरे ॥ मगजांक्लितांढेकरे ॥ तसुजेसा
 ७ ॥ मजतुवांजीकेलेतैसे ॥ माअंमीपराधाडुनिदेशे
 स्तुतिहिसेपावपिसे ॥ बांधलेवाचे ॥ ८ ॥ नोयेहवी
 तद्दी ॥ आठवि ॥ राहुनिस्ततीजेवूरावि ॥ तेगुरागुणि
 याधरावि ॥ सरोभरिवि ॥ १५ ॥ तरियकरसाचेजेतुलिंग
 केविकसंगुणागुणीभाग ॥ मोतीफोटुनिसंधितांचां

राम ॥ २ ॥

(3A)

ग॥ कृ० ऐ० सं० वि० भ० ले० ॥ २५ ॥ आ० गि० तुं० वा० प० तुं० वि० मा० ये० ॥ इ० हिं
बो० लिं० ना० स्तु० ति० हो० ये० ॥ तरि० डिं० भो० पा० धि० कु० आ० हे० ॥ वि० टा० बु० त
थ ॥ २६ ॥ जी० जाले० न० पा० दु० वें० आ० ले० ॥ ते० गी० सा० बी० प० रा० के० वि
बो० ले० ॥ ऐ० सं० उ० पा० धि० उ० स० ट० ले० ॥ का० इ० वा० नु० ॥ २७ ॥ तरि० आ० त्मा
वि० तुं० ए० क० सं० रा० ॥ हे० हिं० ह्य० गीं० जा० तां० दा० तारा० ॥ ओं० तु० लु० तुं० वा
हि० रा० ॥ घा० प० ता० सि० ॥ २८ ॥ ह्य० गीं० नि० सा० चा० तु० ज० ला० गि० ॥ स्तु
ती० ने० द० खें० जी० ज० गिं० ॥ मो० न० वां० नु० नि० ले० गीं० ओं० गिं० ॥ स्तु० सि० ना
मा० ॥ २९ ॥ स्तु० ति० का० हिं० न० बो० ल० रां० ॥ पु० जा० का० हिं० न० बू० र० रां० ॥ स्तु
नि० धि० कां० हिं० न० बू० रां० ॥ तु० सा० ठां० इं० ॥ ३० ॥ त० हीं० जिं० त० ले० जै० से० भु० लि

(५)

श्री
॥३॥

पिसें आला पचालि ॥ तैसें वानुने माउलि ॥ उपसाहेतु ॥ २६ ॥
 आतांगी तार्था विमुगुत मुदि ॥ लावि माझिये वाग्दही ॥ जं
 माने हे सभासंधी ॥ सज्जनो चां ॥ अयेथ ह्यरागीतले श्री निव
 ति ॥ नको हे पुडत पुडति ॥ परिसिलो हा घृष्टि किति ॥ वेचवे वा
 क्रीजेगा ॥ रेजा तवं विनवीतु ज्ञान देवो ॥ ह्यरा हो कां जी
 पासावो ॥ तरि अवधान देतु देवो ॥ ग्रंथा आतां ॥ २७ ॥ जीगी
 तार लप्रासादाचा ॥ कवस अर्थ चिंता मरागीचा ॥ सर्वगीता
 दर्शनाचा ॥ पाठा दुजा ॥ २८ ॥ लोकी तरि आशी येसें ॥ जे दु
 रूनि कवसदिसे ॥ आशि सेटीची हा तवसें ॥ देवते चित्तिये ॥ ३ ॥

राम

॥२१

(3A)

तैसें चियेथहि आहे ॥ जेये कें चिये रों अध्याये ॥ आघवा
चिट्ट होये ॥ गीतागमुतो ॥ ३२ ॥ मी क्वसुया कूर रों ॥ अ
ठरावां अध्यावो ह्यरों ॥ वाइला बादराय रों ॥ गीताप्रा
सादी ॥ ३३ ॥ नवे क्वसा परते काहिं ॥ प्रासादिं कामनाहिं
तें सांगत से गोताहि ॥ संपले परों ॥ ३४ ॥ व्यास सहजे सं
त्रिंबवि ॥ ते रों निगम रत्न चिं ॥ उपनिषदा र्था विमाचि
माजिरवां दिलि ॥ ३५ ॥ तेथ त्रिवर्ग ना अणु आरु ॥ आड
उनिगाला अपारु ॥ तें माहा भारत प्राकारु ॥ सवंतां केल्ल
३६ ॥ माजि आत्मज्ञानाने ए क्ववट ॥ दब वाडें सांडु निचोरवट

(5)

१८

शा.
॥१॥

घडिलें पार्थ वैकुंठ॥ संवा दकुं सरि॥ ३५॥ निवृत्तीसूत्र सोडुति
यां॥ सर्वशास्त्रार्थ पुरवणिया॥ आवोसा धिल्लामांडुति
या॥ मोक्षरेखेचा॥ ३६॥ येसे न करितां उभारा॥ पंधरा अध्याय
तया पंधरा॥ भूमिनिर्वाले या पुरा॥ प्रासादु
जाळा॥ ३७॥ उपरिसोळावा अध्यायो॥ तो ग्रीवे घंटेचा आ
वो॥ सप्तदशुतो चिठावो॥ पाडिघारिणे १८॥ तथा हिव
रिअष्टादशु॥ तो आपैसामांडुलाकळसु॥ उपरिगीता
दिकिंब्यासु॥ ध्वजेलागला॥ १९॥ ह्यगोनिमागील आ
ध्याये॥ जेचढतिया मुमीचे आये॥ तयांचे पुरे दवीत आहे

राम
॥१॥

(5A)

आपुला आगी ॥ १ ॥ जालया कामाना हिं नोरि ॥ ते कळ
से होये उजरि ॥ ते विअणा द्यु विवरि ॥ साद्यंतगीता ॥ २ ॥ ये
साव्या से विंदारि ॥ गीता पासा दुसे उरि ॥ आण
निरारि विले प्राणिये ॥ नाना परि ॥ ३ ॥ एक म दक्षणा
जपानिया ॥ बाहिरौ नि कुरीत यथा एक श्रवणामिसे
छाया ॥ से वितियो नि ॥ ४ ॥ एक अवधाना चापुरा ॥ वि
दुषा उदभीतरा ॥ देउ निरि गतिगा भारी ॥ अर्थज्ञाना
वां ॥ ५ ॥ ते निज बोधें उरा उरि ॥ भेटती आत्मयां श्रीहरि
परि मोक्षसादिं सरि ॥ सर्वा हिं आधि ॥ ६ ॥ समर्थाने पं

(6)

शा.
॥५॥

श्रीभोजने॥ तविल्यांवरिल्यां एकपद्मान्ते॥ तेविश्रवणो
अर्थपठरो॥ मोक्षविलासे॥ १५॥ येसागीतावैश्वप्रासा
दु॥ अठरांवांकुचसुविषदु॥ म्यांहरणीतलाहाभेदु॥ जा
तोनियं॥ १६॥ आतांससादशापाठि॥ अध्यावोवैसे
निउठि॥ तोसंबंधुसांगोदिवि॥ दिसेतेसा॥ १७॥ नमोदुतां
दोन्हीआकाश॥ अउलेपकशरीर॥ हेअर्धनारिनाट्यर
रूपिदिसे॥ १८॥ कांगगायमुनाउदका॥ वोघवगंवेगविक
दाविहोउनिपक॥ पाणीपणो॥ १९॥ नानावाढलिदिवसें॥ क
वाविंबिंबेसे॥ परिसिनानेलेवेजेसे॥ चंद्रिनाहिं॥ २०॥ ते

राम
५

(6A)

सीसिनानि च्याही पदे ॥ श्लोकतो श्लोका कछे दे ॥ अध्या
वो अध्याय भेदे ॥ गमेदिरा ॥ २० ॥ परिप्रेमया निउजरि ॥ अ
नानरपन धरि ॥ नानार लमणि दोरि ॥ एका चिं जैसी ॥ २० ॥
मोलिये मेवो निव हवे ॥ एका वखिया पाडु आहे ॥ परिशो
भेरुप होये ॥ एक चि तीय ॥ २१ ॥ फुला फुल सरांचे लेख नदे
दृति दुजा आंगुली नपदे ॥ श्लोक अध्याय ते रों पाडे ॥ जाणा
वेहे ॥ २२ ॥ सात शत श्लोक ॥ अध्याया अठरा चें लेख ॥ प
रिद्वो बोलिले एक ॥ जेंदु जें ना हिं ॥ २३ ॥ म्यां हिं न संडु नि
तसे ये ग्रंथाय क्री केली आहे ॥ मस्तु तते रों निवो हे ॥ निरो

शा. पदा आइका ॥ पदातरिसतरावां अध्यावो ॥ पावतां पुरतो
 ॥ ६ ॥ ठावो ॥ जें संपता म्हाका देवो ॥ ऐसे बो लिले ॥ १ ॥ ना व्रह्म
 नामान्ना विधि ॥ बुद्धी सांड नि आसि कि ॥ कर्म की जति ति
 तुझि ॥ असंते हो ति ॥ ६ ॥ हा आइको नि देवाना बो लु ॥ अर्जु
 ना आला डो लु ॥ ह्यो कर्म नि सु म्हा ॥ ठेला देखो ॥ ६ ॥ तो अ
 ज्ञानां धुत वं धा पुढा ॥ इश्वर विन दखे ये वटा ॥ तेथ ना ये क उ
 ढां ॥ कां सुझे तया ॥ ६ ॥ आणो र जेत मे दो न्ही ॥ गेल्या वी
 ए अद्रा सा न्ही ॥ ते कां लागे अभिधानि ॥ ब्रह्मानीये ॥ ६ ॥
 मग को तां सै वंदे गों ॥ वारिया वरी ल बंधो नें ॥ सडि पडे खे

(7A)

ब्रह्मणो वागिणी त्वेते ॥ ६४ ॥ तेनो कर्म द्वादो ॥ तयो हि जन्मो त
 राचिकडे ॥ दुर्मवावेयेवदो ॥ कर्मा माजि ॥ ६५ ॥ नो विपाये हे ॥
 जूहोये ॥ तरि ज्ञानाची वयोग्यता ल्हा हे ॥ ये हवीये एों विजा
 ये ॥ निरया लया ॥ ६६ ॥ कर्मि हा ठावो वरि ॥ आहा ति बहू पा
 अवसरि ॥ आतां कर्मि ठावो वरि ॥ मोक्षा विये ॥ ६७ ॥ तरि पिढो
 कर्माचा पागु ॥ कि जो अवघा त्यागु ॥ आदरि जो अयंगु ॥ स
 न्यासुतो ॥ ६८ ॥ कर्म बो जे निवृद्धि ॥ जेथ भंयाची गोष्टि नाहि
 ते आत्मज्ञान जेहि ॥ स्वाधीन होये ॥ ६९ ॥ ज्ञानाचे आह्वान
 मंत्र ॥ जे ज्ञान पीकत सक्षेत्र ॥ ज्ञान आवृष्टिते सत्र ॥ तंतु जे को
 ७० ॥ ते दोन्हें सन्यास त्याग ॥ अनुष्ठु नि स्रु दो जग ॥ तरि हे

शा.
७

विभ्रातां चांग यक्तिपुसों ॥ ७ ॥ ऐसें ह्यणो निपाथें ॥ सागस
 न्यासत्यवस्त्रे ॥ रूपहोवावपाजेथें ॥ प्रभवेला ॥ ७ ॥ नेथप्रत्यु
 तरेबोलि ॥ श्रीहृच्छेजेवावत्रिलि ॥ तथायुक्तिजाकि ॥ अष्टा
 दशा ॥ ७ ॥ एवंजन्यजनवभावे ॥ अध्यावोअध्यायातेप्रस
 वे ॥ आतांआइकाबरवे ॥ पुसिलेंतें ॥ ७ ॥ तरिपांडुकुमरेतेणें
 देवाचेंसरताबोलणें ॥ जाणोनिअंतकरणें ॥ काणोघेत
 लि ॥ ७ ॥ येहवीतलावेंपिसला ॥ जोनिश्चिनुआहेकीरजा
 ला ॥ पारिदेवोराहेउगला ॥ हेसाहाकेना ॥ ७ ॥ वसधाळ
 यांहिवरि ॥ धेनुनेवचाविदुरि ॥ अनन्यपीतीविपरि ॥ ये
 शीविआहे ॥ ७ ॥ तेरोकाजेंहंविणबोळावें ॥ देसिलेंतहं

राम
७

(8A)

पाहावे। भोगितांवा दुदुगावे। पटियंता ठाडं। ०५। ए३। भि
 माची देजाति। पार्थतं वंते विमूर्ति। ह्यणो निकरुं लाहे खंति
 उगे परगावि। ०५। आणिसंवा रचे निमिसें। जे अयव
 हारिवस्तु असे। तं भोगिजे कं जेसें। आरिसं सु। ०५। मग
 संवादुतो पारुषे। तरि भोगलें भोगितां थोके। हेकां साहा
 वेलसुं रे। लंवा बलयां। ०५। याला गिं साग सन्यास
 पुसाच्या नेघे उने मिसु। उपरत विलें विदुस। गीते वेते। ०५।
 अठरावां अध्यावोन के। हे एका अध्याडं गीता वि अहे। जे
 वांस रूचिगा यदुहे। ते वेळका इसि। ०५। ते सीसं पतां हि
 अवसरि। गीतां आदर विलि माघारि। स्वामी भूत्यावाने

श्रीः
निः

(१)

करु संवादुकाइ ॥ परिहे असो ऐसे ॥ अर्जुने पुसी जत
असे ॥ ह्यणे विनति विचरे ॥ अवधारि जो ॥ ५ ॥ अर्जुन उ
वाच ॥ श्लोक ॥ सन्यासस्य महाबाहो तत्वमिच्छामि वेदि
तुं ॥ त्यागस्य बहुषीकेश एय केशिनि षुदन ॥ १ ॥ टिका ॥
हा जीपन्यास आति त्याग ॥ येदादि एक अर्थिलागु जै
सासां घातु आति संगु ॥ संगते च बोलै ॥ ६ ॥ ते सा त्यागं
सन्यासे ॥ त्याग विबोली जत असे ॥ आमचे नितवं मान
से ॥ हे जाणिजे ॥ ७ ॥ नांकां हिं आशि अर्थ भेदु ॥ तो देवो क
रित विषदु ॥ येथ ह्यणे मुकुंदु ॥ मिन विपे हे ॥ ८ ॥ श्लोक
श्री भगवानुवाच ॥ काम्पानां कर्मणां न्यासं सन्यासे

राय
५

(१०)

वयोविदुः ॥ सर्वकर्मफलत्यागं प्राहत्यागं विवक्षणाः ॥ २ ॥
टिका ॥ येद्विं अर्जुना तु श्यामनि ॥ त्यागसत्यासदेहिं ॥ ए
कार्यगमवेदं मनि ॥ मिहिं सान ॥ १ ॥ कीरदं हिं इहिं शदिः
यागु विबो लिजे त्रिगुदि ॥ परिकारणायैथं मेदि ॥ ये तु
लेचि ॥ १ ॥ जे निपटु निवृत्तं सांदिजे ॥ तं सां दुणे संन्यास
ह्रति जे ॥ आणिके मात्रकां त्यजिजे ॥ तो त्यागु गा ॥ १ ॥
परिकारणावृत्तं च फळ ॥ सांदिजे कारावृत्तं केवळ ॥ हं सां गों
विबळ ॥ चित्तदेपां ॥ १ ॥ त रि आपै सीदा गिं दुगे गर ॥ सादु
विं विति असारा ॥ ते से लो बेरा जागर नुठिति ते ॥ १ ॥ न
परितां सै घट्टणों ॥ उठिति ते से साधि वेदों ॥ नाहिं गारा

शा.
॥५॥

काउगों ॥ जया परि ॥ १० ॥ कां आंग जालें साहा जें ॥ परिल्ले
गों उद्यमें का जे नदी आपेसी आपा दिसे ॥ विहिरि जे वि ॥ १५ ॥
ते सें नित्य नै मिति का ॥ कर्म होये सभा निव ॥ परि नका मितो का
मि का ॥ ननि फु जे जें ॥ १६ ॥ काम नें चिदळ वाडे ॥ जे उभा रा
व्या घडे ॥ अशु मेधा दी रूपे ॥ याग जेथ ॥ १७ ॥ कापी रूप आ
राम ॥ अग्र हारे न मद्रा ग्राम ॥ आति कहि ना ना संश्रम ॥
व्रता चेत ॥ १८ ॥ ए सें इष्टा हत सब ॥ जया काम ना एक मु
ळ ॥ जेके लें भोग वा फळ बांधो नियां ॥ १९ ॥ दिहा नया गा
वां आलया ॥ जन्म मृत्यु निया सोहळया ॥ नाह्य गों नये
धनं जया ॥ जया परि ॥ २० ॥ कां ललाटी चेलि हि लें ॥ न

राम
॥५॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com